



## MADHYAMIK STAR PAR ADHYAYANRAT ANUSUCHIT JATI EVAM SAMANYA VARG KE VIDHYARTHIO KE AATMA SAMPRATYAY KA ADHYAYAN

### माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन

Dr. Naveen Kumar Yadav

Principal, Taj Memorial T. T. College, Kotputli (Jaipur), India.

#### ABSTRACT

किशोरावस्था में विद्यार्थियों की शारीरिक व मानसिक स्थितियों में ढेरों परिवर्तन होते हैं यही समय उनकी माध्यमिक स्तर की शिक्षा की प्राप्ति का भी होता है। वे एक नई मनोवृत्ति, स्वप्रत्यय का विकास करने लगते हैं। माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के आत्म प्रत्यय के कुछ नवीनताएं तथा विभिन्नताएं प्रतीत होती हैं। शोध परिणामों के द्वारा पूर्व में सिद्ध हो चुका है किसी भी व्यक्ति के समायोजन में सकारात्मक उच्च आत्म प्रत्यय महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। इसी तथ्य को दृष्टिगत रखकर प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा विषयवार छात्रा-छात्राओं के स्वप्रत्यय को जानने का प्रयास किया गया।

**KEY WORDS :** माध्यमिक विद्यालय, आत्म सम्प्रत्यय, अनुसूचित जाति, सामान्य जाति

#### प्रस्तावना :

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा सामाजिक जीवन में उसकी उपलब्धि महत्वपूर्ण होती है। वह समाज का निर्माता एवं संरक्षक होता है। यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में शिक्षा एक पौष्टिक पदार्थ है जिसके द्वारा उसे शक्ति और बल प्राप्त होता है तथा उसमें एक शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाह करता है। मनुष्य और समाज दोनों शिक्षा के माध्यम से विकसित तथा पल्लवित होते हैं तथा शिक्षा के कारण ही नागरिक अपने कर्तव्य को समझते हैं और अपना उत्तरदायित्व पूरा करते हैं। माध्यमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो विश्वविद्यालय शिक्षा से पहले और प्राथमिक शिक्षा के बाद में दी जाती है। माध्यमिक स्तर पर शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी सामान्यतः किशोरावस्था के विद्यार्थी होते हैं जिसे तूफान तथा झंझावत की अवस्था कहा गया है। इस अवस्था में बालक एवं बालिकाओं की शारीरिक तथा मानसिक स्थिति में ढेरों परिवर्तन होते हैं। वे समूह में रहना पसन्द करते हैं तथा वे स्वयं तथा दूसरों के बारे में कुछ धारणाएं भी बनाने लगते हैं जैसा कि पियाजे (1969) ने कहा है तीव्र मानसिक विकास होने के कारण बालक वयस्क के समाज में अपने आपको संगठित मानता है। वह एक नई मनोवृत्ति, संप्रत्यय तथा परिपक्वता का विकास करता है। इस दिशा में सकारात्मक विकास के लिए शिक्षकों की अहम् भूमिका होती है। शिक्षक वर्ग उन्हें उचित दिशा-निर्देश प्रदान कर एक परिपक्व सोच तथा मनोवृत्ति कायम करने में मदद करते हैं। जो किशोरों को एक स्वस्थ समायोजन में काफी सहायक सिद्ध होते हैं।

आत्म सम्प्रत्यय शब्द का प्रथम प्रयोग रोजर्स द्वारा किया गया। आत्म-संप्रत्यय से तात्पर्य व्यक्ति के उन सभी पहलुओं एवं अनुभूतियों से होता है जिसे व्यक्ति अवगत होता है, हालांकि उसका यह प्रत्यक्षण हमेशा सही नहीं होता। आत्म-संप्रत्यय को व्यक्ति प्रायः विशेष कथनों के रूप में व्यक्त करता है। जैसे “मैं एक व्यक्ति हूँ जो...”。 आत्मसंप्रत्यय की दो विशेषतायें हैं पहली विशेषता यह है कि आत्म-संप्रत्यय का एक बार निर्माण हो जाने पर उसमें सामान्यतः परिवर्तन नहीं होता। हाँ, बहुत कोशिश करने से उसमें परिवर्तन हो सकता है जो अनुभूतियाँ व्यक्ति के

आत्म-संप्रत्यय के साथ असंगत होती हैं, उसे व्यक्ति स्वीकार नहीं करता है और यदि स्वीकार भी करता है तो विकृत रूप में।

माध्यमिक स्तर पर अध्ययन करने वाले विद्यार्थी के आत्मप्रत्यय में कुछ नवीनताएं तथा विभिन्नताएं प्रतीत होती हैं। ये विभिन्नतायें उनकी अपनी सोच पारिवारिक सदस्यों, (स्वयं सहपाठियों की उनके प्रति सोच) स्वयं समाज के रवैये के कारण होती हैं। किसी भी व्यक्ति के सामाजिक समायोजन में सकारात्मक उच्च आत्मप्रत्यय महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतएव शोधकर्ता ने उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी के आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना महत्वपूर्ण समझा है।

#### समस्या कथन :

“माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन”

#### तकनीकी शब्दों का पारिभाषीकरण :

माध्यमिक स्तर— ऐसे विद्यालय जिसमें कक्षा 9वीं व 10वीं तक के विद्यार्थियों को शिक्षण करवाया जाता है, माध्यमिक स्तर के विद्यालय कहलाते हैं। यहाँ माध्यमिक स्तर में कक्षा 10वीं के विद्यार्थियों को लिया गया है।

#### आत्म सम्प्रत्यय :

स्व-पहचान का समुच्चय जो कि पूर्व अनुभवों से निर्मित होते हैं और जिनका प्रयोग सामाजिक वातावरण से संबंधित उद्दीपन में व्यवस्थित एवं व्याख्यापित करने के लिए होता है, आत्म सम्प्रत्यय कहलाता है।

#### अध्ययन के उद्देश्य :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों के

आत्म सम्प्रत्यय का अध्ययन करना।

2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।

### अध्ययन की परिकल्पनाएँ :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।

### न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जयपुर संभाग के माध्यमिक स्तर के कुल 1000 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छित विधि द्वारा किया गया है। इनमें 500 विद्यार्थी अनुसूचित जाति के तथा 500 विद्यार्थी सामान्य वर्ग से लिये गये हैं। जिसमें से प्रत्येक वर्ग में 250 छात्र तथा 250 छात्राओं का चयन किया गया है।

### अध्ययन विधि :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

### प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों के आत्म सम्प्रत्यय के मापन हेतु आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित आत्म सम्प्रत्यय मापनी का प्रयोग किया गया है। इसमें आत्म सम्प्रत्यय के विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित 48 प्रश्नों का समावेश किया गया है। इस उपकरण में 6 आयाम हैं। जो निम्न क्षेत्रों (शारीरिक, सामाजिक, स्वभाव, शिक्षा, नैतिकता, बौद्धिकता) का प्रतिनिधित्व करते हैं।

### शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

### प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका-1

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	148.20	9.94	2.74	0.05 स्तर पर सार्थक
छात्रा	250	152.08	8.20		

$$(df = N_1 + N_2 - 2 = 250 + 250 - 2 = 498)$$

उपर्युक्त तालिका 1 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का मध्यमान क्रमशः 148.20 एवं 152.08 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन क्रमशः 9.94 व 8.20 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 2.74 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मान 1.96 से अधिक है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

तालिका-2

समूह	न्यादर्श	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
छात्र	250	159.24	11.21	1.68	0.05 स्तर पर असार्थक
छात्रा	250	156.40	9.22		

$$(df = N_1 + N_2 - 2 = 250 + 250 - 2 = 498)$$

उपर्युक्त तालिका 1 में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय का मध्यमान क्रमशः 159.24 एवं 156.40 प्राप्त हुआ है तथा मानक विचलन क्रमशः 11.21 व 9.22 प्राप्त हुआ है। प्राप्तांको की गणना के आधार पर क्रान्तिक अनुपात का मान 1.68 प्राप्त हुआ है जो स्वतंत्रता अंश 498 एवं 0.05 सार्थकता स्तर पर सारणीयन मान 1.96 से कम है। अतः इससे स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

### निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति के छात्रों की अपेक्षा छात्राओं का आत्म सम्प्रत्यय उच्च पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्र एवं छात्राओं के आत्म सम्प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत सामान्य वर्ग के छात्राओं की अपेक्षा छात्रों का आत्म सम्प्रत्यय उच्च पाया गया।

### अध्ययन की शैक्षिक निहितार्थ :

युवा पीढ़ी किसी भी राष्ट्र की भाषा उन्नति का आधार है और शिक्षा युवा पीढ़ी की मार्गदर्शक। राष्ट्र का भविष्य विद्यालयों में निर्मित होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि इस भविष्य का आंकलन किया जाए। माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं में अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के आत्म सम्प्रत्यय के आंकलन से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों में सकारात्मक सोच विकसित करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतंत्रतापूर्वक अपना विचार प्रस्तुत करने का मौका देना चाहिए। अनुसूचित जाति एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों को समय-समय पर विभिन्न साधनों द्वारा मार्गदर्शित करके उनके आत्म सम्प्रत्यय को और अधिक बढ़ाया जा सकता है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों की उच्च उपलब्धि एवं सकारात्मक समायोजन तथा उच्च आत्म सम्प्रत्यय के लिए अभिप्रेरित करके कक्षा वातावरण को उत्तम बनाया जा सकता है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. कपिल, एच.के. (2004) : "अनुसंधान विधियाँ", हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन, आगरा।
2. मंगल, एस.के. (2006) : शिक्षा मनोविज्ञान, प्रकाश ब्रदर्स, लुधियाना।

3. श्रीवास्तव, डी.एन. (2007): 'अनुसंधान विधियाँ' आगरा, साहित्य प्रकाशन
4. सिंह, अरुण कुमार (2010): 'मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ' मोतीलाल बनारसीदास, नई दिल्ली।
5. गैरेट, हेनरी ई. (2011): 'शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग' कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
6. राय, पारसनाथ (2012): 'अनुसंधान परिचय' लक्ष्मी नारायण अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा
7. गुप्ता, विवेक (2013): 'उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र-छात्राओं के स्व प्रत्यय का अध्ययन'। परिपेक्ष्य वर्ष 20, अंक 3 पेज नं. 106-114
8. गुप्ता, राजेश कुमार (2017): 'कला एवं विज्ञान संकाय क सेवापूर्व अध्यापकों के आत्म सम्प्रत्यय एवं शिक्षण व्यवसाय के प्रति अभिवृद्धि का तुलनात्मक अध्ययन' ऐशियन जर्नल ऑफ एज्युकेशन रिसर्च एण्ड टेक्नोलॉजी, वॉल्यूम 7 (2) पेज नं. 32-37